ऐस्ट्रो-पामिस्ट्री के महत्वपूर्ण सूत्र

डॉ. भोजराज द्विवेदी

हस्तरेखाओं से जन्म कुण्डली बनाने का अनूठा उपाय

अनुक्रमणिका

1.	विषय प्रवेश	7
2.	भारतीय हस्तरेखाओं का इतिहास: हथेली में ग्रहों के स्थान (चित्र)	17
3.	ऐस्ट्रो पामिस्ट्री के कुछ महत्वपूर्ण सूत्र	18
(i)	हथेली में ग्रहों का स्थान	
(ii)	हथेली में राशियों के स्थान	19
(iii)	हस्तरेखाओं का जन्मांग से ताल-मेल	20
(iv)	लाल किताब के अनुसार	23
4.	हस्तरेखाओं में राहु व केतु का स्थान	25
5.	सूर्य रेखाओं का विश्लेषण (चित्र)	39
6.	सूर्य रेखा से जन्म महीना निकालना	40
7.	जन्म वार से आयु की परीक्षा	45
8.	द्वादश भावों से रेखाओं का सम्बन्ध	47
9.	चेहरे से लग्न की पहचान	60
10.	लग्न से ग्रहों की पहचान	66
11.	ग्रहों की विशेष स्थिति को बताने वाली विशिष्ट रेखाएँ	85
(i).	सूर्य की स्थिति द्वादश भावों में	85
(ii).	चन्द्र की स्थिति द्वादश भावों में	98
(iii)	मंगल की स्थिति द्वादश भावों में	111
(iv)	बुध की स्थिति द्वादश भावों में	123
(v)	बृहस्पति की स्थिति द्वादश भावों में	135
(vi)	शुक्र की स्थिति द्वादश भावों में	147
(vii)	शनि की स्थिति द्वादश भावों में	159
(viii)	राहु की स्थिति दादश भावों में	171
(ix)	केतु की स्थिति द्वादश भावों में	183

ता देना, अपने आप में बहुत बड़ा चमत्कार है। मेरे इस तथ्यात्मक शोध की देश-विदेश में बड़ी ारी चर्चा हुई। सैकड़ों प्रशंसा पत्र आये, अनेक विद्वानों ने व्यक्तिगत मिलकर इस विलक्षण कार्य को ार्वजनिक रूप से प्रकाशित करने हेतु बधाइयाँ दीं तथा इस शोध कार्य को निरन्तर गति देने का विनम्र अनुरोध लगातार करते रहे तथा यह दबाव भी लगातार डालते रहे कि इस विचित्र विधा पर एक स्वतंत्र ग्रंथ लिखें ताकि हस्तरेखा विज्ञान जादुई, तिलस्मी दुनियां से बाहर निकल कर, ज्योतिष के धरातल पर वैज्ञानिक प्रारूप प्राप्त कर सके। ऐसा कुछ हो सके जिसमें 2+2 = 4 की गणितागत ष्टीकरण वाली प्रक्रिया, हस्तरेखाओं की बनावट से आकाशीय सितारों, ग्रह-नक्षत्रों के तालमेल की क्रिया सामने आ सके।

इन्हीं दिनों "रंजन पब्लिकेशन" के यहाँ से मेरी तीन-चार पुस्तकें प्रकाशित हुईं। इतना ही नहीं, राहमिहिर को लेकर मेरे शोधकार्य, जिसमें राजस्थान के किसी पहले व्यक्ति को ज्योतिष क्षेत्र में डॉक्टरेट" की उपाधि मिली, को प्रकाशित करने की जिम्मेदारी भी 'रंजन पब्लिकेशन' ने ली। गातार सम्पर्क एवं विभिन्न चर्चाओं में श्री राजेन्द्र गोयल एवं ज्योतिष विद्वानों के अद्‌भुत पारखी नके पिताश्री गोयल साहब ने "ऐस्ट्रो-पामिस्ट्री" पर नई पुस्तक लिखने की मुझे प्रेरणा दी। मैंने भी ावावेश में हाँ भर दी, परन्तु अपने व्यस्ततम जीवन में अनेकों पुस्तकें आध्यात्म, वास्तु व ज्योतिष त्र में प्रकाशित होने के बाद लोग कहाँ आराम से बैठने या लिखने देते हैं। परन्तु कुछ विशेष कार्य **ऐस्ट्रो-पामिस्ट्री**" के क्षेत्र में अभी तक हो नहीं पाया था। इस सत्य को भी झुठलाया नहीं जा सकता।

गत बीस वर्षों से ज्योतिष क्षेत्र में कम्प्यूटर प्रोग्राम का प्रवेश हो गया। कम्प्यूटरीकृत जन्म त्रिकाओं का प्रचलन तेजी से बढ़ने लगा। ज्योतिष को एक नई वैज्ञानिक उपलब्धि "कम्प्यूटर ॉरोस्कोप" के रूप में प्राप्त हुई। विद्वान् मनीषियों की सोच इससे भी कुछ आगे बढ़ी और उन्होंने म्प्यूटर हॉरोस्कोप की तरह "पामिस्ट्री हॉरोस्कोप" बनाने की सोची। कई देशी-विदेशी कम्प्यूटर ोग्राम बनाने वाली कम्पनियों ने मुझ से सम्पर्क किया। हस्तरेखाओं को "**कम्प्यूटर**" पर लाने का ाव मुझ पर बढ़ने लगा। मैंने भी इस विषय में चुनौती स्वीकार कर कुछ ठोस काम करने का निर्णय या। क्योंकि पामिस्ट्री के विद्वान् तो भारत के प्रत्येक शहर-गाँव एवं गली-गली में मिल सकते हैं; रन्तु ऐस्ट्रो-पामिस्ट्री के विद्वान् सम्पूर्ण भारत में एक या दो व्यक्ति भी बड़ी मुश्किल से मिल सकते । मंगल प्रधान व्यक्ति होने के कारण मुझे चुनौतीपूर्ण एवं असम्भव कार्य, जो कोई नहीं कर सकता, न कार्यों को करने में सदैव विशेष रुचि रहती है। इधर मान्यवर श्री गोयल साहब का दबाव भी झ पर लगातार बढ़ता गया, फलस्वरूप इस विषय पर यह अनोखी एवं पहली पुस्तक प्रबुद्ध पाठकों हाथों में है, जिसको प्रकाशित करने का श्रेय "रंजन पब्लिकेशन" को मिला है।

हस्तरेखाओं की दुनियां में ऐसे किस्से-कहानी सुनने के बहुत अवसर मिले, जिसमें यह कहा ाता रहा कि अमुक व्यक्ति ने मेरा हाथ देखते ही मेरी जन्मकुण्डली बता दी। ऐसे अनेक व्यक्तियों मैं मिला और उनके सान्निध्य व निर्देशन में उन-उन सज्जनों को भी मिला जिन्होंने हाथ देखकर ण्डली बनाने का दावा किया। दिल्ली, मुम्बई, चैन्नई, व होशियारपुर के भृगुशास्त्रियों व ड़ी-शास्त्रियों की गली-गली की खाक छान ली, परन्तु निष्कर्ष कुछ नहीं निकला। कुछ बातें तो हने सुनने में बड़ी अच्छी व आकर्षक लगती हैं; परन्तु उनकी व्यावहारिक सत्यता इतनी आकर्षक हीं होती।

हस्तरेखा से जन्मपत्रिका बनाने के विषय का मैं पूर्ण ज्ञाता नहीं हूँ; परन्तु इस विषय में दखल जरूर रखता हूँ। मुझे आज दिन तक ऐसा कोई विद्वान् संसार में नहीं मिला जिसने मेरी हस्तरेखा देखकर मेरी ग्रहों की स्थिति स्पष्ट कर दी हो। यदि कोई पाठक मुझे ऐसे विद्वान् के दर्शन करा दे तो मैं उसका सदैव ऋणी रहूँगा। यदि इस विषय में कोई विद्वान् व्यक्ति वैज्ञानिक स्पष्टीकरण करते हुए कुछ सूत्र ही प्रकट कर दे, तो मैं ही नहीं, अपितु भारतीय हस्तरेखा विज्ञान, समग्र हस्तरेखा शास्त्री उसके ऋणी रहेंगे। आज हस्तरेखा शास्त्र को वैज्ञानिक सूझ-बूझ, शोध एवं गणितागत स्पष्टीकरण प्रकट करने वाली सामग्री की महती आवश्यकता है। आज हस्तरेखा विज्ञान को जादुई चमत्कारों, कहानी-किस्सों एवं तिलस्मी दुनियां से बाहर निकाल कर विज्ञान की दुनियां में पदार्पण कराने वाले वैज्ञानिक की महती आवश्यकता है।

हस्तरेखा देखना आज भी कला की श्रेणी में आता है जबकि ज्योतिष एक विज्ञान है। ज्योतिष को विज्ञान का दर्जा उसके गणितागत स्पष्टीकरण एवं आकाशीय चमत्कारों के प्रत्यक्षीकरण ने दिया। हस्तरेखाओं में आज भी गणितागत स्पष्टीकरण का एक भी सर्वमान्य साधारण-सा सूत्र तक स्थापित नहीं हो सका।

उदाहरणार्थ अमुक व्यक्ति का विवाह कब होगा? हस्तरेखा में अंदाज तो हम बता सकते हैं कि विवाह शीघ्र होगा या देरी से, 20 वर्ष की आयु में होगा या 24 वर्ष में? परन्तु यह नहीं बता सकते कि 20 वर्ष 6 माह 7 दिन की आयु में होगा। क्योंकि ऐसी कोई भी गणना करने का सूत्र हस्तरेखा में आज दिन तक स्थापित नहीं हुआ। ज्योतिष शास्त्र में दशाओं, अन्तर्दशाओं, प्रत्यन्तर दशाओं व सूक्ष्म दशाओं, अथवा गोचर ग्रहों के माध्यम से ऐसी भविष्यवाणी करने की सम्भावना बनी रहती है, जबकि हस्तरेखा में नहीं?

ऐसे ही अनेक प्रश्न हैं—नौकरी कब लगेगी? व्यापार कब शुरू होगा? प्रथम संतान कब होगी? प्रमोशन कब होगा? विदेश यात्रा कब होगी? कौन से वर्ष माह में होगी? सगाई कब होगी? कौन से वर्ष तथा माह में? ऐसे सैकड़ों प्रश्न हैं जिनकी तारीख बताने में हस्तरेखाएँ लाचार हैं? पंगु हैं? अक्षम हैं? उसके पास कोई उपाय या फार्मूला या सर्वमान्य सूत्र नहीं है? अब प्रत्येक हस्तरेखा विशेषज्ञ को इस चुनौती को खुले मन-मस्तिष्क से स्वीकार कर, इस दिशा में द्रुतगति से शोध कार्य करना चाहिए।

आज वैज्ञानिक उपकरण हमारे पास हैं। कम्प्यूटर, स्लाइड प्रोजेक्टर, स्लाइड फिल्में, हस्त प्रिन्ट लेने के आधुनिकतम तरीके, स्केनर इत्यादि ऐसे उपकरण हैं जिनके द्वारा हम एक छोटे से अंगूठे को सात फीट बड़ा करके पर्दे (स्क्रीन) पर देख सकते हैं, उसका सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण कर सकते हैं। आज एन्थ्रोलोजी, क्रिमिनोलॉजी एवं इन्टरनेट के माध्यम से दूरस्थ प्रदेशों-विदेशों में स्थित गुप्त एवं रहस्यमय ज्ञान को भी तत्काल कुछ क्षणों में हमारे पास ला सकते हैं। वैज्ञानिक सुविधाओं एवं नित-नूतन वैज्ञानिक उपकरणों के इस आविष्कारक युग में भी, यदि हस्तरेखाओं व ज्योतिष पर अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति उपेक्षित रह जाती है तो यह हमारे देश का दुर्भाग्य होगा।

मैंने इस पुस्तक में ऐस्ट्रो-पामिस्ट्री के कुछ महत्वपूर्ण सूत्र उद्‌घाटित करने की चेष्टा की है। मेरा अब तक का अनुभव बताता है कि हस्तरेखाओं से जन्मकुण्डलीगत ग्रहों की स्थिति बताई जा सकती है। हथेली में पर्वतों के उठाव व श्रेष्ठता से ग्रहों के उठाव व श्रेष्ठता का पता चलता है। हाथ में जो पर्वत दबा हुआ होगा, जन्मकुण्डली में सम्बन्धित ग्रह भी दबा हुआ (Down) होगा। इसके लिए

शुभ बृहस्पति की अष्टम भाव में स्थिति
(Positive Jupiter in Eighth House)

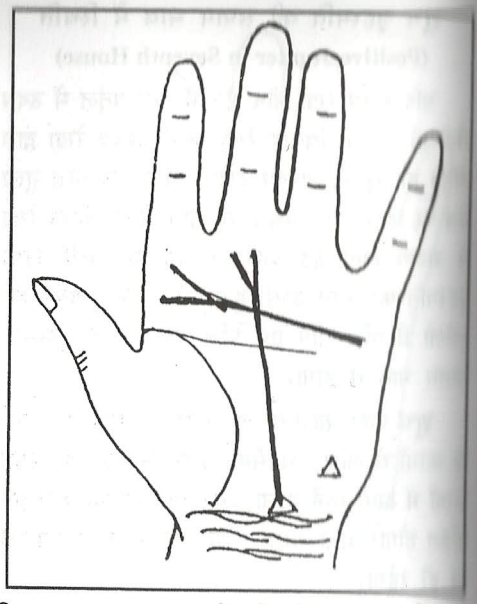

हथेली में बृहस्पति का पर्वत गायब हो, भाग्य रेखा सूर्य रेखा से न मिलती हो, कर्क राशि क्षेत्र में त्रिकोण हो, भाग्य रेखा या हृदय रेखा अपने प्रारम्भ या अन्त में द्विशाखी हो, भाग्य रेखा का उदय त्रिकोण में हो, अंगुलियों के अग्रभाग पर कुल आठ ऊर्ध्व रेखाएं हों तो बृहस्पति अष्टम स्थान में होगा।

शुभ फल–धनवान, किसी के अधीन न रहने वाला, हर काम को गुप्त रखने की चेष्टा रखने वाला, दीन दु:खियों की सेवा करने वाला, परोपकारी, जंगल में मंगल मनाने वाला, परिवार में लम्बी आयु वाला, स्त्री पक्ष से धन पाता है, ससुराल धनाढ्य होती है एवं जातक के लिए सभी मददगार रहते हैं।

निशानियाँ–दुनियाँ की आवाज, जातक शरीर पर सोना पहनेगा तो सुखी रहेगा। कुण्डली में यदि शुक्र 2, 6 या 8वें हो तो जातक को पुत्र सन्तान अधिक होगी। पाँच से अधिक पुत्रों का योग बनता है। सन्तान रेखा पर दृष्टिपात करके ही भविष्यवाणी करें।

अशुभ बृहस्पति की अष्टम भाव में स्थिति
(Negative Jupiter in Eighth House)

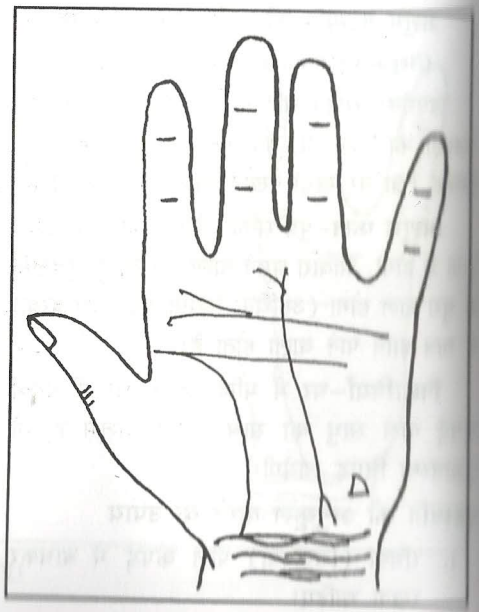

उपरोक्त रेखाएं यदि विकृत हों, शनि व मंगल के पर्वत दबे हुए या विकृत हों तथा बृहस्पति का पर्वत सही स्थान पर न हो तो गुरु अशुभ फल देगा।

अशुभ फल–दूसरों के धन पर नजर रखने वाला, परस्त्रीरत, आय होते हुए भी धन की बरकत नहीं, निर्धन, डरपोक, भला करने वाले का बुरा करेगा, खून की कमी, गुस्सा तेज या रक्तचाप का रोगी होता है।

निशानियाँ–फकीर की झोंपड़ी, आवारा साधु का साथ।

बृहस्पति को अनुकूल करने के उपाय

1. शरीर पर सोना पहनने से अच्छा होगा।
2. शुक्र की चीजें (घी, दही, आलू, कपूर) धर्म स्थान में देना, फकीर के बर्तन में दान डालना चाहिए।
3. पुखराज रत्न जड़ित 'गुरु यन्त्र' गले में धारण करें।
4. गुरुवार का व्रत रखें।

शुभ बृहस्पति की नवम भाव में स्थिति
(Positive Jupiter in Ninth House)

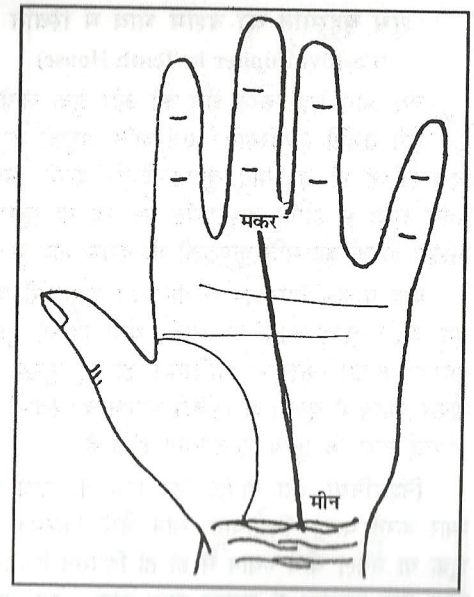

यदि भाग्य रेखा सीधी, स्पष्ट व गहरी हो तथा मीन क्षेत्र से उदित होकर मकर राशि क्षेत्र तक जाती हो तो जन्म कुण्डली में बृहस्पति नवम स्थान में होगा।

शुभ फल–राजा होते हुए भी फकीरी मस्ती होगी। कभी शाह कभी फकीर, परोपकारी कार्यों में रुचि, सर्वार्थ चीजें बनवाने वाला, धर्म प्रचारक, जौहरी व धातु के कामों से लाभ, सन्तान से सुखी, लेखन/सम्पादन कार्यों में तरक्की और कीर्ति पाने वाला यशस्वी जातक होता है।

निशानियाँ–पैतृक मकान में रहने वाला, किस्मत को चार चाँद लगाने वाला (माता-पिता का नाम रोशन करने वाला)। यदि सूर्य की स्थिति कुण्डली में अच्छी है तथा हथेली में सूर्य रेखा भी है तो व्यक्ति बहुत धनवान होगा।

अशुभ बृहस्पति की नवम भाव में स्थिति
(Negative Jupiter in Ninth House)

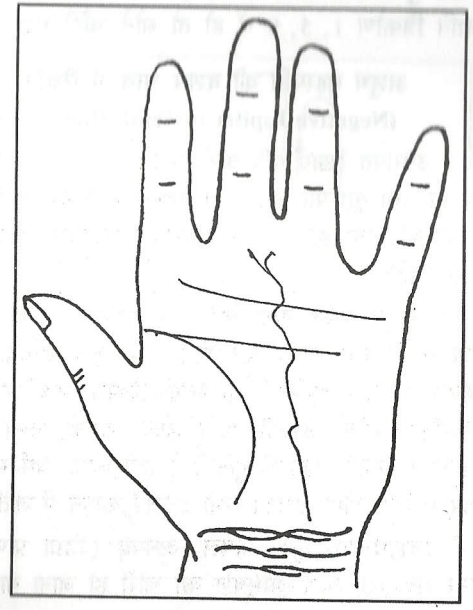

मणिबन्ध से उठने वाली भाग्य रेखा टेढी-मेढी एवं खण्डित हो, द्विशाखी हो। गुरु का पर्वत दबा हुआ हो तो बृहस्पति का फल प्रतिकूल होता है। सूर्य पर्वत की स्थिति का भी तुलनात्मक अध्ययन करें।

अशुभ फल–धन कमाने के प्रयत्न विफल होंगे, नास्तिक (धर्म तक छोड़ दे मगर किसी लालच के कारण नहीं), स्वार्थी, सन्तान से दु:खी, पिता का विरोधी, पिता से विवाद करता रहे, ससुराल की हानि करने वाला, भाग्यहीन जातक होता है।

निशानियाँ–किस्मत डुबोने वाला, घर के पास उजड़ा धर्म स्थान, यदि मंगल एवं बुध अशुभ स्थिति में हो तो जातक अल्पायु होगा।

बृहस्पति को अनुकूल करने के उपाय

1. गंगा स्नान करना, प्रत्येक जन्म दिन सफलतापूर्वक मनाना चाहिए।
2. तीर्थ यात्रा करना/करवाना चाहिए।
3. झूठा वायदा न करना।
4. जूठा भोजन न खाना, न खिलाना। बुके पार्टी से दूर रहें।
5. किसी के साथ बैठकर भोजन न करें एवं बफर पार्टी में भाग न लें।
6. पुखराज पहनें एवं गुरु की सेवा करें।

रुचक योग

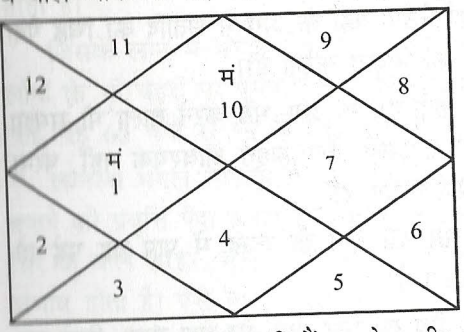

यदि किसी भाग्यवान के होंठ बहुत मोटे न हों, शरीर में धड़ व पैर बराबर से लम्बे हों, भौंहें व बाल आकर्षक हों, लालिमा लिए हुए गेहुआँ-सा रंग हो, गर्दन में 2-3 रेखाएं साफ दिखती हों, मुँह अर्थात् होठों की चौड़ाई कुछ लम्बी हो, स्वभाव में आक्रामक, परम पराक्रमी व अधैर्यशाली तथा विशेष मनोबली हो तो समझिए कि जन्म समय में मंगल स्वगृही या उच्च का होकर केन्द्र में होगा। ऐसे लोग अपनी हिम्मत से आगे बढ़ने वाले होते हैं। इनके शरीर में खून व मांस की प्रधानता होती है। अर्थात् शरीर में मांसलता व रक्त की लालिमा साफ झलकती है। लेकिन इनकी जांघें व पिण्डलियाँ

अधिक मजबूत नहीं दिखती हैं। इनके शरीर की लम्बाई प्रायः अपनी अंगुली के नाप से 96-100 अंगुल या छः फीट के आसपास होती है। इनके हाथों या पैरों में वीणा, बैल, धनुष, वज्र, चन्द्रमा या त्रिशूल जैसी रेखाओं के चिह्न होते हैं। ये सब बातें हमने सैकड़ों बार खरी उतरती हुई पाई हैं। ये लोग प्रायः अगुवाई पसन्द करते हैं। यश लोलुप भी होते हैं। ये लोग बहुत परिश्रम करते हैं। इनका पेट प्रायः चौकोर होता है, अर्थात् छाती व पेट के घेरे में बहुत अन्तर नहीं होता। ये अक्सर मध्यम कद-काठी वाले होते हैं। इनके मुंह की लम्बाई यदि माथे से ठुड्डी तक नापी जाए तो लगभग उतनी ही लम्बाई वाला इनका पेट (फेफडों से शुरू कर नाभि से थोड़ा नीचे तक) भी होता है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता है। प्रशासक होता है। भूमि से लाभ प्राप्त करता है। मूल त्रिकोणी व उससे भी कम रहने पर मंगल स्वक्षेत्री होना चाहिये; परन्तु शूरवीरता इनका प्रधान गुण होता है।

लग्नस्थ बुध की पहचान

(क) **मुख** – बुध प्रभावी व्यक्ति का गोलाकार मुख होता है। चेहरे को देखते ही उसकी बाल सुलभ सरलता और आभ्यन्तरिक प्रसन्नता टपकती पड़ती है। रक्त स्वच्छ और कभी-कभी चमड़े से (त्वचा के आवरण) फूट-फूट कर छिटकने को तैयार-सा प्रतीत होता है।

(ख) **ललाट** – बुध के प्रभाव का सूचक ललाट ठीक अर्धचन्द्राकार या धनुषाकार वर्तुलत्व लिए होता है।

(ग) **बाल** – बुध के प्रभाव में बाल घने, काले और कोमल पाये जाते हैं।

(घ) **भौंह** – बुध के प्रभाव में भौंहों के बाल और उनकी बनावट पर भी प्रभाव पड़ते देखा गया है। भौंहों का आकार स्पष्ट पर्याप्त गोलाई लिये बना होता है। साथ ही वे पर्याप्त सघन होती हैं।

(ङ) **आँख** – बुध के प्रभाव से आँखों में सजीवता पैदा होती है। भीतर से मानो आँखों से हँसी फूटी पड़ती है। शुक्र के प्रभाव में आँखें कजरारी होती हैं।

(च) **गाल** – बुध के कारण दोनों गाल अर्द्धवृत्ताकार रूप में मुख के दोनों ओर गेंद से

(छ) **नासिका** – बुध के प्रभाव से नासिका मझोले कद की और थोथरी ही होती है।

(ज) **दन्त पंक्ति** – अकेला बुध दन्त पंक्ति को मध्यम आकार के दाँतों से सुसज्जित सघन और दीप्तिमयी बना देता है। ऊपर और नीचे वाली दोनों ही पंक्तियाँ गठीली, उजली, चमकीली और सीधी बैठी होती हैं।

(झ) **ओष्ठ** – बुध लग्नस्थ हो तो ओठ पतले, सुन्दर और रक्ताधिक्य बतलाने वाले लाल होते हैं। मुँह छोटा और ओठ एक-दूसरे से पूर्ण चिपके हुए रहते हैं।

(ञ) **त्वचा** – बुध के प्रभाव में त्वचा अत्यन्त मुलायम सजीव देख पड़ती है। कहीं उसमें रूखापन प्रकट नहीं हो पाता। लग्नस्थ बुध होने पर त्वचा की यह दशा सारे शरीर में एक-सी पायी जाती है। त्वचा देखने में हल्की और पतली लगती है। भीतर से रक्त फूट पड़ता-सा भी देख पड़ता है विशेषकर यदि बुध चन्द्र लग्नस्थ हों अर्थात् चन्द्र + बुध की युति हो। त्वचा का रंग सुवर्णवत् और चमकदार होता है।

(ट) **वार्तालाप** – बुध लग्नस्थ हो तो मनुष्य की बोलचाल के ढंग में एक प्रकार का लचीलापन होता है। वह हँसकर बातें करने की प्रवृत्ति रखता है। हँसना मानो उसकी प्रकृतिप्रदत्त निधि है जिसे वह सर्वदा अपने मुखमण्डल पर लिये फिरता है।

इसके साथ-साथ वह बातूनी भी हुआ करता है। बोलता बहुत है। पापाक्रान्त बुध के साथ यदि एक से अधिक पाप ग्रह लग्नस्थ अथवा द्वितीयस्थ हों तो उसकी झूठ की कोई सीमा नहीं होती। व्यक्ति धूर्त और ठग होता है। बातों में फँसाने में सिद्धहस्त और अपने काम में निःसंकोच होता है। अकेला बुध नीचस्थ होने पर ही कदाचित् ऐसा व्यक्ति कभी-कभी दृष्टिगत हो।

लग्नस्थ बुध वाला जातक जब बातें करने लगता है तो उसके हृदय से प्रसन्नता फूटी पड़ती है जो उसके मुख पर हँसी बनकर निकल बहती है। बिना मधुर स्मित के ऐसा जातक कोई बात मुँह से निकाल ही नहीं सकता।

स्मितपूर्वक बात करने के साथ ही ऐसा जातक वाचाल होता है। बुध यदि दूषित हुआ—जैसे राहु, केतु या शनि से युत होकर, तो वह अनर्गल प्रलापी ही हो सकता है। यदि बुध बलवान् हुआ तो वह वाग्मी होता है और अपने कथन के लिये आवश्यक शब्द उसकी वाणी से अनायास फूट पड़ते हैं।

नीचस्थ बुध लग्न में हो तो मनुष्य बहुत अनर्गल प्रलाप करने वाला होता है। उसकी बक-बक से छुटकारा पाना सरल नहीं होता।

वृष लग्न की कुण्डली में मिथुन का बुध द्वितीयस्थ हो या एकादशस्थ हो तो वह मनुष्य अपनी वक्तृत्व शक्ति में अद्वितीय होता है।

मिथुन लग्न की जिस कुण्डली में बुध बली होकर चौथे घर में बैठा होता है वह व्यक्ति प्रसिद्ध लेखक या प्रसिद्ध बाजीगर होता है। पहलवान हो तो कुश्ती और मल्ल युद्ध के दाव-पेंच में बड़ा ही सिद्धहस्त होता है।

(ठ) **रक्त** – बुध यदि पापाक्रान्त हो—जैसे राहु या केतु के साथ, तो वह मनुष्य में चर्म

चक्र रेखा (Chakra Rekha)

चित्र-10

चित्र 10 में देखें J गोल वक्राकार रेखा को। हिन्दू सामुद्रिक शास्त्र में चक्र भगवान् विष्णु का परम प्रिय आयुध है जिसके द्वारा वे शत्रुओं का संहार करते हैं। असुर राहु का सिर भी इसी चक्र से काटा गया था। ऐसे जातक को बुरे (विपरीत) कार्यों द्वारा जल्दी सफलता मिलती है। यदि यह चिह्न बांयें हाथ में हो तो ऐसी मान्यता है कि ऐसे जातक का जन्म विष्णु राहु युद्ध के दौरान (ग्रहण-काल में) हुआ है। यदि दांयें हाथ में हो तो जातक की माता के लिये खतरे का चिह्न है। यदि स्त्री जातक के बांयें हाथ में यह रेखा हो तो प्रथम सन्तति की अल्प मृत्यु या ऐबोरशन (Abortion) होगा। यदि यह चिह्न राजकुमारी, रानी या भद्र राजनैतिक महिला के हाथ में हो तो प्रायः उनके पुरुष सन्तति नहीं होती। सम्भवतः ऐसे तक की कुण्डली में पंचम भाव को लेकर **'पद्म नामक'** कालसर्प योग होता है। यह रेखा हथेली यदि उत्तर-दक्षिण या पश्चिम भाग में हो तो ज्यादा शक्तिशाली होती है।

शनिश्चर रेखा (Sanischara Rekha)

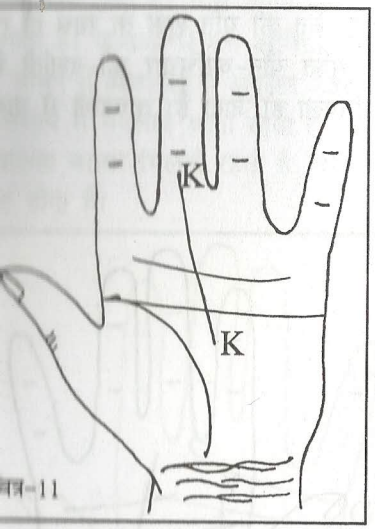

त्र-11

जब जन्म कुण्डली में राहु शनि से प्रभावित हो तो हथेली में एक रेखा K-K उदित होती है। यह रेखा हथेली के मध्य से प्रारम्भ होकर शनि (मध्यमा) अंगुली के अन्दर तक घुस जाती है। यह रेखा बांयें हाथ में भी हो सकती है तथा दांयें हाथ में भी हो सकती है। यह एक प्रकार की दुर्भाग्य सूचक रेखा है। ऐसे जातक की जन्म कुण्डली में नवम भाव में राहु अथवा नवम भाव में राहु-केतु को लेकर **'शंखचूड नामक काल सर्पयोग'** होता है। अथवा राहु+शनि की युति कुण्डली में होती है। राहु संभवतः मकर या कुम्भ राशि में हो सकता है।

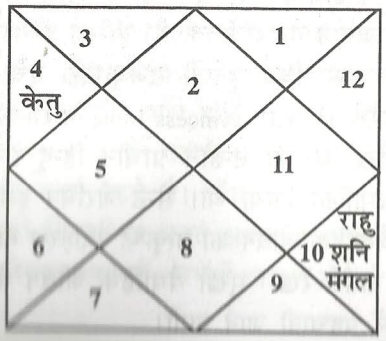

इस रेखा के कारण जातक के भाग्योदय में रुकावट नौकरी में अवनति का भय रहता है। परिश्रम का फल मिलता। अदालत से दण्ड की स्थिति बनती है।

मैं एक ऐसे पुलिस अधिकारी को जानता हूँ, जिसके हाथ ऐसी रेखा थी। मैंने उसे चेतावनी दी कि तुम्हें अपनी नाओं पर नियन्त्रण रखते हुये सावधान रहना चाहिये। एक

दिन एक चुनाव सभा में उसकी ड्यूटी थी। चुनाव प्रत्याशी पर अज्ञात हमलावरों ने हमला कर उसे मार डाला। जातक को नौकरी से हाथ धोना पड़ा। इस प्रकार के अप्रत्याशित दुर्भाग्य से ऐसी रेखाओं वाले जातक का सामना होता रहता है।

L. अर्धचन्द्र रेखा (Ardha Chandra Rekha)

हथेली में चित्र 12 की भांति L को देखें। यह फलदार बीजयुक्त बीजकोष का प्रतिनिधित्व करता है। ऐसे जातक की जन्मकुण्डली में केतु की स्थिति अत्यन्त शुभ होती है। जो कि दीर्घायुष्य का द्योतक है। हमने बहुधा यह चिह्न जीवन रेखा के प्रारम्भ में देखा है। ऐसे जातक का जन्मस्थल से दूरस्थ प्रदेशों में भाग्योदय होता है।

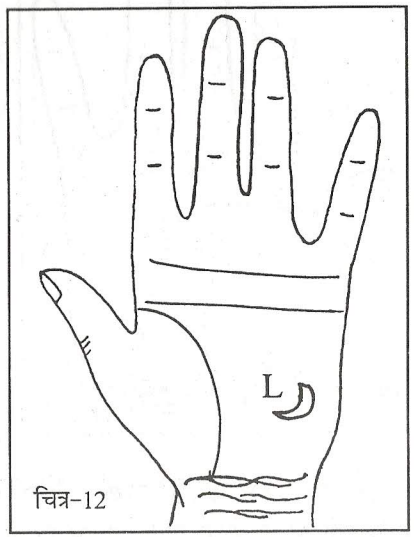

चित्र-12

M. पोद्गल रेखा (Podgal Rekha)

केतु ग्रह का एक शुभ चिह्न कई बार चित्र-13 की भांति M-M रेखा के रूप में दिखाई देता है। ऐसे जातक बहुत पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी होते हैं। ज्योतिष, अध्यात्म, इतिहास, वास्तुविज्ञान एवं विविध कलाओं में रुचि रखते हैं। ऐसे जातक अपने घर में शौकिया पुस्तकालय रखते हैं। इनका मस्तिष्क उर्वरक होता है एवं कम्प्यूटर की तरह कार्य करता है। यदि यह रेखा सूर्य रेखा से मिल जाय या उसमें बदल जाय तो व्यक्ति बहुत बड़ी सफलता या कीर्ति को प्राप्त कर, उसका उत्सव मनाता है। ऐसे जातक की कुण्डली में केतु+सूर्य की युति एवं बुध का भी संयोग होता है।

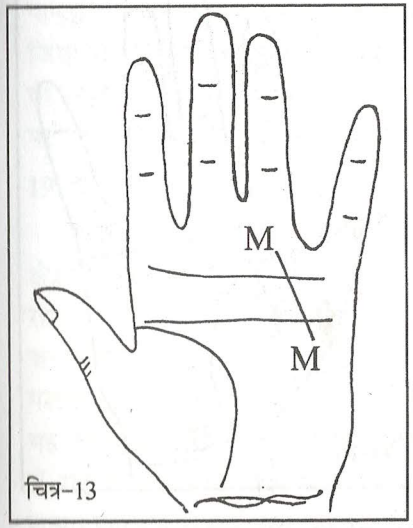

चित्र-13

N. चन्द्ररेखा (Chandra Rekha)

यदि किसी व्यक्ति का जन्म चन्द्र ग्रहण के समय हो तो उसके हाथ में चित्र-14 की भांति एक रेखा N-N दिखाई देगी। यह रेखा राहु क्षेत्र से निकलती हुई दिखाई देगी। यह रेखा आकस्मिक परिवर्तन की सूचक रेखा है। यदि यह रेखा भाग्य रेखा से मिलती हुई भी दिखाई देती है तो जातक का भाग्योदय विदेश में होता है।

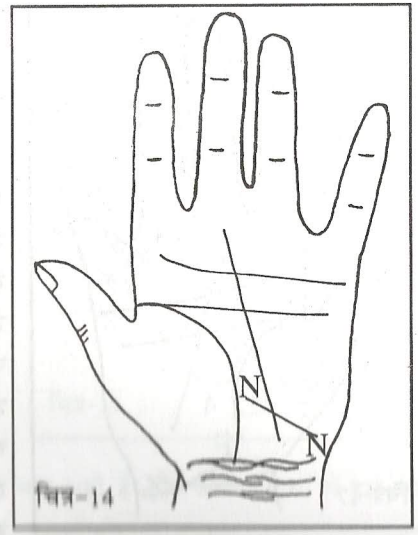

चित्र-14